होली प्रभू-प्रेम के रंग की

तकरीबन सभी भारतीय त्यौहार आध्यात्मिकता से सम्बन्धित हैं और आध्यात्मिकता के सभी विषय सूक्ष्म है। उन सूक्ष्म विषयें को दर्शाने के लिए स्थूल पदार्थो का सहारा लिया गया है। परन्तु आज के समय में सूक्ष्म आघ्यात्मिक पहलू भूला दिए जाने के कारण सभी त्यौहारों का रूप भौतिक ही बन गया है। आध्यात्मिकता को विशुद्ध भौतिक रूप से मनाना शुरु कर दिया गया है।

भक्ति की क्रियाओं के आध्यात्मिक अर्थ -

उदाहरण के तौर पर आध्यात्मिक ज्ञान को दर्शाना के लिए पानी शब्द का सहारा लिया गया है। हम पतीत से पावन तो ज्ञान से ही बन सकते है। परन्तु कालान्तार में ज्ञान स्नान को भुल कर जल स्नान को पावन करने वाला मान लिया गया। लेकिन ज्ञान के स्थान पर पानी का प्रयोग होने से अनर्थ हुआ है। हम सभी जानते है कि परमत्मा ज्ञान का सागर है पतित पावन है लोकिन ज्ञान सागर के बजाए यदि हम सभी जानते है कि परमात्मा ज्ञान का सागर है पतित पावन है। लेकिन ज्ञान -सागर के बजाए यदि हाम उन्हें पानी का सागर कहे तो क्या गति होगी? कहाँ जड़ पानी और कहाँ परम चेतन परमात्मा की परम बुद्धि से विनिसृत होने वाला ज्ञान दोनो में कही भी साम्य नहीं हो सकता। इसी प्रकार आत्मा एक ज्योति है जो सूक्ष्म है और पाँच तत्वों की नहीं बनी है। इसको दर्शाने के लिए दीपक जलाना, व्यक्ति को मरते समय दीपक दिखाना या दीवाली पर दीपक जलान,ये सब आत्मा की ही यादगारें हैं। पूजा आत्मा की होती है न कि शरीर की। हर देवी-देवता जिनकी हम पूजा करते आ रहे हैं, शरीर से भिन्न आत्मा ही है। उस पावन और प्रकाशमान आत्मा की स्मृति में ही दीपक जलाते हैं। मरते समय व्यक्ति को दीपक दिखाने का भी यही रहस्य है कि उसे यह स्मृति रहे कि वह शरीर नहीं बल्कि आत्मा है। आत्मा की ज्योति जलने से ही अन्दर का अन्धकार दूर होता है और तभी सच्ची दीवाली होती है। इसी प्रकार, पाँच विकारों को विष अर्थात ज़हर के रूप में दर्शाया गया है। मन्दिर शब्द का वास्तविक अर्थ हमारे मन मन्दिर से है (मन-दर) अर्थात मन में प्रभु को स्थान देना है। परन्तु इस वास्तविकता को दरकिनार कर अब तो स्थूल इंटो का मंदिर बना कर, उसमें किसी देवता आदि की मूर्ति स्थापन करके पूजा की जाती है।भक्त लोग महामाई शक्ति का आह्वान करने के लिए सारी रात जागते हैं। वास्तव में तो अज्ञान को नींद कहा गया है। हम आत्माएँ अज्ञानता की नीद में सोई हुई हैं और आत्मा के अन्दर जो ईश्वरीय शक्तियाँ छुपी हुई हैं वे शिव की शक्तियाँ हैं। आतः स्वयं को अज्ञान की नींद से जगाना और आत्मा में छिपी हुई गुप्त शक्तियों को प्रकट करना ही वास्तविक जागरण है। जब आत्मा अज्ञान निंद्रा से जाग जाएगी तो सुषुप्त आत्मिक शक्तियाँ भी स्वतः ही जागरण है। जब आत्मा अज्ञान निद्रा से जाग जाएगी जो सुषुप्त आत्मिक शक्तियाँ भी स्वतः ही जागृत हो जायेगी। जिन आत्माओ को अन्दर काम, क्रोध आदि विकार तथा ईर्ष्या, द्वेष वैर भाव आदि अवगुण हैं उन्हें ही राक्षसों की संज्ञा दी गई हैं उन्हें तथा उनकी डरावनी शक्ल बना कर सिर पर सींग तथा हाथों में नाखून आदि दिखा दिए हैं ताकि लोग उनकी सूरत से नफरत करके वैसे कर्मो से भी नफरत करें।

इसी प्रकार होली भी रंगो का त्योहार माना गया है। रंग किस अर्थ का सूचक है? यहाँ रगं शब्द का भावार्थ कोई हरा, पीला,लाल, गूलाबी आदि रंगो से नहीं है बल्कि रंग अर्थात प्रभाव या नशा, जैसे कि कहा जाता है जैसा संग वैसा रंग आर्थात् जिस प्रकार का हमारा संग होगा उसी प्रकार का हमारे पर प्रभव पड़ेगा। हमारी मनोवृत्तियाँ हमारे कर्म तथा हमारा स्वभाव उसी अनुसार ही होंगे। आज हर मनुष्य किसी-न-किसी रंग में रंगा है वह प्रायः धन के रंग में अर्थात लोभ के रंग में है, मान-शान के रंग में अहंकार तथा फेशन के रंग में और काम आदि आसुरी वृत्तियों के रंगो में रंगा है। उसके जीवन में इन्हीं का प्रभाव व नशा है। प्रभु-प्रेम के नशे से बहूत दूर हैं। प्रभु-प्रेम का रंग व नशा तभी चढ़ा सकता है जब बाकी रंग उतरें। सूरदास खल कारी कामरी चढ़त न दूजो रंग अर्थात मन रूपी कामरी पर जब तक विकारों का काला रंग चढ़ा हुआ है तो प्रभु का उजला रंगे कैसे चढ़ा सकता है? तो होली कोई स्थूल रंगों का त्योहार नहीं है बल्कि प्रभु के प्रेम में रंगे जाने का त्योहार है। जब हम ईश्वरीय नशा नहीं चढ़ा सके और प्रभु -प्रेम के रंग में नहीं रंग सके तो हमने स्थूल रंगो की होली खेलनी शुरू कर दी। जब हम खुद को तथा दूसरों को भी प्रभु प्रेम का रंग चढ़ाएँ तभी सच्ची होली होगीं। इसके लिए रूहानी ज्ञान रूपी जल लेकर उसमें सहज योग रूपी रंग घोल कर, उसे आत्मिक स्नेह की पिचकारी में भर कर स्वयं पर भी डालें तथा अन्य पर भी डालें।

रंग दो प्रकार के होते हैं कच्चे और पक्के। कई रंग ऐसे होते हैं जो आज चढ़ाए जाते हैं और अगले ही दिन धूप में उड़ जाते हैं। परन्तु कई रंग पक्के होते हैं जो वर्षों तक बने रहते हैं प्यारे शिव बाबा के प्रेम का रंग भी होना चाहिए, माया रुपी धूप में उड़ना नहीं चाहिए। कई बार रंग पूरा नहीं उड़ता पर फीका पड़ कर बदरंग हो जाता हैं । माया के वशीभूत होने वाली आत्मा का जीवन भी बदरंग हो जाता है। आतः हमें पक्का रंग लगाना है, परिस्थितियाँ आने पर भी रुहानी रंग को फीका नहीं होने देना है, तभी कहेंगे सच्ची होली मुबारक।

कहा जाता है कि होली खेलने से सभी के आपसी वैर -विरोध मिट जाता हैं ।वास्तव में परमात्मा से योग लगाने से हमारी आत्मा पवित्र बन जाती हैं। उसके सारे दुर्गुण (ईर्ष्या,द्धेष और विरोधादि) दूर हो जाते हैं। मन में प्रेम जाग जाता है, विचार, कर्म, स्वभाव आदि सब शूद्ध हो जाते हैं। स्थूल रंग ड़ालने से तो और ही कई बार झगाड़े खड़े हो जाते हैं। कपड़े भी खराब होते हैं तथा वैर-विरोध मिटाने के बजाए बढ़ने का डर रहता है। तो आइए, हम सभी ज्ञान और योग के अभ्यास द्धारा प्रभु-प्रेम के रंग में रंग कर सच्चा नारायणी नशा चढ़ाएँ तथा औरों को भी इसी रंग में रंग कर सच्ची-सच्ची होली मनाएँ।

ओम् शान्ति